पद्य शिक्षण

Dr. Kamble Jotsna

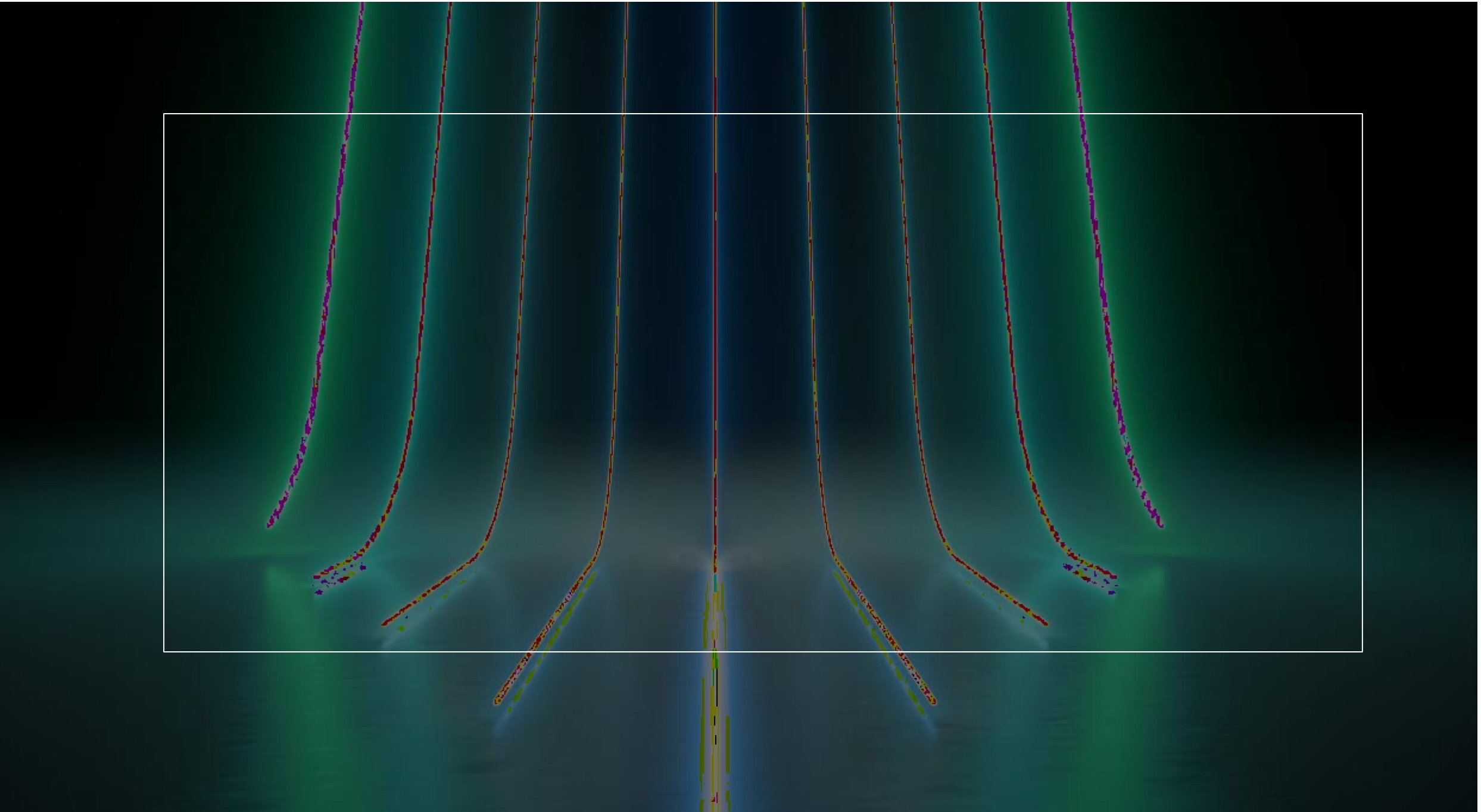

पद्य (काव्य) उस छन्दोबद्ध एवं लयात्मक साहित्यिक रचना को कहते हैं, जो श्रोता या पाठक के मन में भावात्मक आनन्द की सृष्टि करती है। **काव्य**, **कविता** या **पद्य**, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। भारत में कविता का इतिहास और कविता का दर्शन बहुत पुराना है। इसका प्रारंभ भरतमुनि से समझा जा सकता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की

परिभाषा

१.श्यामसुंदर दास के अनुसार - "कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा जिसमें भाव की अभिव्यंजना ही कविता कहलाती है।"

२.आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार -

"कविता ही वह साधन है जिसके द्वारा से सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध की रक्षा होती है।"

३.जयशंकर प्रसाद के शब्दों में - पद्य आत्मा की संकल्पना रस की अनुभूति है।

कविता शिक्षण की विषताएं

१. अनुभूतत कीप्रिानता

२. सत्यम शि ि म ् सुंदरम ् की भाि ना

३. भाषा

४. संगीतात्माक

५. रसानुभूतत

६. स्थईता

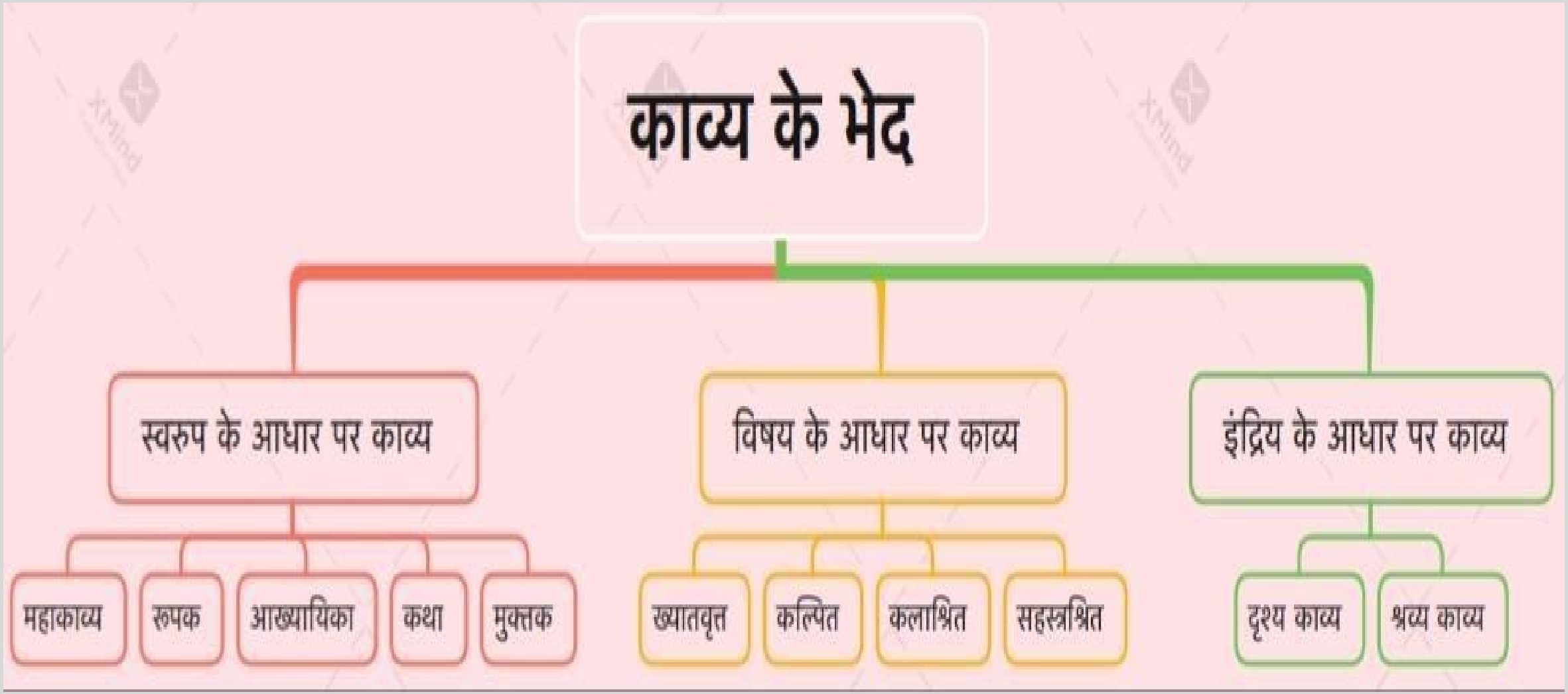
काव्य के भेद
स्वरुप के आधार पर काव्य
विषय के आधार पर काव्य
इंद्रिय के आधार पर काव्य
महाकाव्य
रूपक
आख्यायिका
कथा
मुक्तक
ख्यातवृत्त
कल्पित
कलाश्रित
सहस्त्राश्रित
दृश्य काव्य
श्रव्य काव्य

कविता शिक्षण की विधियाँ

१. गीत विधि
२. अभिनय विधि
३. समीक्षा वि धि /
प्रश्नोत्तर वि धि /
मूल्यांकन वि धि
४. अर्शबिो विधि
५. व्याख्या या व्याख्यात्मक विधि
६. व्यास प्रणाली
७. तुलनात्मक विधि

१. गीत विधि

- प्रारंभिक कक्षा में बाल गीत के लिए प्रयोग
- कुछ गीतों के अर्थ का कोई चित्र नहीं होता।
- बालकों को सुर बनाना, ताल में लाना और संगीत से परिचय कराना।

२. अभिनय विधि

- उचित अंग-संचालन के द्वारा भाव व्यक्त करना।
- पद्य के आधार पर सामूहिक अभिनय सिखाना।
- कविता में रुचि आएगी, कविता कंठस्थ हो जाएगी, स्फूर्ति आएगी।
- खेल-खेल में उचित अंगसंचालन द्वारा कविता का भाव व्यक्त।

३.समीक्षा विधि या प्रश्नोत्तर विधि/मूल्यांकन विधि

- उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए हितकारी
- काव्य के गुण-दोषों का विवेचना
- तीन तथ्यों की समीक्षा की जाती है-

  भाषा की समीक्षा,

  काव्यगत भावों की समीक्षा,

  कविता पर पड़ने वाले प्रभावों की समीक्षा
- यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि छात्र इसमें स्वयं सक्रिय है।

४. अर्थबोध विधि

- शि क्षक कवि ता का थि यं ि ाचन करते ि ु ए, थि यं उनका अर्श बताते ि ै।
- भािानुभूतत एिं रसानुभूतत निी
- छात्र के ि ल श्रोता
- यि प्रणाली मनिौज्ञातनक निीं ि ै।

५. व◌्य◌ाख्य◌ात◌्मक वि◌ धि◌

- छात्रों से कविता का सथिर ि◌ाचन
- ि◌ददार्श बताते ि◌ ु ए, प्रासंधगत क◌्राओं की चचाश करते ि◌ ु ए, छन्द अलंकार आहद की चचा
- उच्च माध्यशमक कक्षाओं के शलए उपयोगी

६. व्यास प्रणाली

- व्याख्या प्रणाली का विथततृ रूप
- मुख्य क्राके सार्-सार् कई अन्तकश्राओं का िविरण
- उदिारणों से, व्याख्याओं से क्रा में निजीनी का संचार

७. तुलनात्मक विधि

- पाठ्य-कविता की तुलना उसी भाव को व्यक्त करने वाली अन्य कविताओं के साथ करके पाठ्य-कविता के भावों को स्पष्ट करने का प्रयास

- विद्यार्थियों में विवेचन तथा तर्कशक्ति का विकास, ज्ञान का विस्तार

८. खण्डान्वि य विधि

- मुक्तकाव्यों और लम्बी कविताओं के लिए उपयोगी
- शिक्षक की सक्रिय
- प्रश्नोत्तर प्रणाली
- यह विधि मनोवैज्ञानिक नहीं है

कविता शिक्षण की विधियां
गीत विधि
अभिनय विधि
समीक्षा विधि
अर्थबोध विधि
व्याख्या या व्याख्यात्मक विधि
व्यास प्रणाली
तुलनात्मक विधि
खण्डान्वय विधि

क◌ौन स◌ी शि◌ क्षण प्रण◌ाल◌ी ककस थतर पर अपन◌ाए

- प्र◌ार ्शमक थतर क◌ी कक्ष◌ाओ◌ं म◌ें जि◌ ◌ा◌ाँ बच्च◌ों क◌ो ब◌ाल◌ोधचत ग◌ीत◌ोंको रिाना ि◌ोता ि◌ै, ि◌िं गीत एिं अशभनय प्रणाली दोनों का ि◌ी प्रयोग ककया जाए।
- कक्ष◌ा च◌ारस◌े आठ तक अर्शब◌ोि◌ एि◌ ◌ं व्य◌ाख्य◌ाप्रण◌ाल◌ी को अपनाये जाए।
- कक्षा नौ से बारि तक व्यास प्रणाली, प्रश्नोत्तर प्रणाली, त◌ुलना प्रणाली, समीक्षा प्रणाली आहद छात्रों के मानशसक एिं बौद्धिक थतर को ध्यान

कविता शिक्षण के सोपान

१. प्रस्तावना/भूमिका/परिचय

२. उद्देश्य कथन तथा प्रस्तुतीकरण

३. अध्यापक द्वारा सस्वर वाचन/छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन।

४. केंद्रीय भाव ग्रहण के प्रश्न।

५. स्पष्टीकरण एवं सौंदर्य अनुभूति।

६. अध्यापक द्वारा द्वितीय आदर्श वाचन या सस्वर वाचन।

७. अर्थ ग्रहण एवं सौंदर्य बोध परीक्षण।

८. रचनात्मक कार्य